ओम् शान्ति 30-07-05 मधुबन

प्राण अव्यक्त बापदादा का मधुर सन्देश

आज बापदादा के पास जाना हुआ। सदा के माफिक बापदादा दूर से मिलन मनाते मिले। मैं भी लवलीन होते सम्मुख पहुँची और सम्मुख मिलन के अन्तीन्द्रिय सुख के अनुभव में खो गई। कुछ समय के बाद बाबा बोले बच्ची आज क्या समाचार लाई हो। मैं बोली बाबा आज पुरानी दुनिया का भी समाचार लाई हूँ तो आपके लक्की बच्चों का भी लाई हूँ। बाबा मुस्कुराये। मैं बोली बाबा आजकल फिलिप्पिन फैमिली की सुन्दर रिट्रीट, रिट्रीट हाऊस में हो रही है। दादी जानकी भी गई हुई हैं। सबने बहुत-बहुत याद दी है। फिर तो बापदादा के सामने सर्व फिलिप्पिन निवासी बच्चे नयनों में समा गये और बड़े स्नेह स्वरूप से मिलन मनाते बोले, बच्चों ने हिम्मत और बाप की मदद और सर्व की मदद द्वारा रिट्रीट हाऊस अच्छा बनाया है। जो सबको रिफ्रेश होने का स्थान बन गया। बनाने वाले भी कितने भाग्यवान हैं, जो जितनी भी आत्मायें रिफ्रेश होती उसका फल शेयर के रूप में उन्हों को भी मिलता रहता है। बहुत अच्छा संगठन किया है। बापदादा हर बच्चे को दिल की दुआयें और याद-प्यार दे रहे हैं। साथ में सबको समान और सम्पन्न बनने की इनएडवान्स बधाईयां भी दे रहे हैं। बोलो बच्चे, बनना ही है ना ? जनक बच्ची भी साथ है, वह तो उड़ती हुई सबको उड़ायेगी। बोलो जनक के साथी, छोटे बच्चे, लक्की बच्चे ऐसे है ना! जनक बच्ची को तो सदा उमंग है। तन-मन, समय सब सफल करने और कराने का तो सर्व को भी उमंग है ना।

अब तो समय भी वार्निंग दे रहा है। प्रकृति भी अपना जलवा दिखा रहा है। भारत में, विदेश में सब देख रहे हो। आप बच्चे तो जानते हो कि आत्माओं के कर्मों में भ्रष्टाचार, पापाचार बढ़ना ही प्रकृति को हिला रही है। लेकिन आप बच्चे तो हलचल में भी अचल अड़ोल साक्षी दृष्टा बन ड्रामा के भिन्न-भिन्न दृश्य को जानते हुए स्वयं को सम्पन्न बनाने में लगे हुए हो। दुनिया परेशान होती लेकिन आप नॉलेजफुल, पावरफुल की शान में रहते, परेशान नहीं होते। लाइट हाऊस, माइट हाऊस बन चारों ओर शान्ति और हिम्मत की किरणें फैलाते। दुनिया कहती यह क्या हुआ, क्यों हुआ। बच्चों के मन में क्यों, क्या का प्रश्न नहीं। सदा निर्भय मूर्त। निराकारी, निर्मानकर्ता स्थिति में प्रसन्नचित रह प्रसन्नता फैलाते रहते है। बच्चे अब समय है निर्बल को बल देने का। हिम्मत हीन को हिम्मत देने का तीसरे नेत्र के महादानी बनने का। बस दिन रात मन्सा, वाचा और सम्बन्ध-सम्पर्क, कर्मणा द्वारा दाता बनो। विश्वकल्याणकारी बनो। ऐसे कहते बापदादा जैसे सर्व बच्चों को दृष्टि द्वारा शक्ति की करणें दे रहे थे। रजनी बहन, मीरा बहन, निर्मला बहन और सर्व साथियों को बापदादा ने बहुत-बहुत याद दी और मुझे भी दृष्टि देते विदाई दी। ओम् शान्ति